Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

May 2009





ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ

વિજય સ્તંભ સ્થાપન વિધિ

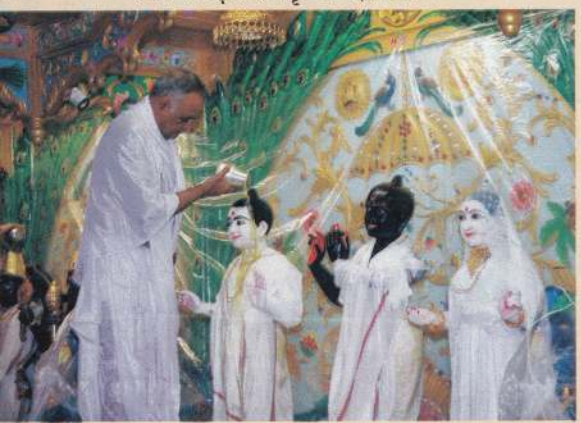
પ્રકાશકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



सीडनी के मंदिर में दीप प्रगट करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ ब्लेक टाउन के मेयर तथा छोटे पी.पी. स्वामी एवं रामकृष्ण दासजी



सीडनी के राजमार्गो पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री



कलिवलेन्ड मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव करते हुये प.पू. बडे महाराजश्री



कलिवलेन्ड मंदिर में सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा कथामृत कराते हुये शा. धर्मवल्लभदासजी



रीहील मंदिर में सत्संगी बालकों द्वारा फल दोलोत्सव संपन्न





चेरीहील मंदिर में रामनवमी को श्रीहरि प्रागट्योत्सव की आरती उतारते हुये शा. विश्वप्रकाशदासजी तथा दर्शन का लाभ लेते हुये हरिभक्त



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 | अंक : 25 | मई-2009

अनुक्रमणिका

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद मंदिर	४
४.	आचार्य महाराजश्री को विवाह में हाथी भेंट में मिलती	५
५.	सत्संग बालवाटिका	७
६.	भक्तिसुधा	९
७.	प्रश्न पेटी	१९
८.	सत्संग समाचार	१७

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने हाथों से विश्व तथा संप्रदाय के लिये अपनी उपस्थिति में अपने स्थान पर बैठाकर जिसकी आरती उतारी तथा त्यागी एवं गृही को उन्हीं की आज्ञा में रहने के लिये कहा ऐसे महापुरुष आदि-आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री, जो मात्र १८ वर्ष की उम्र में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गद्दी को स्वीकार करके सतत ४२ वर्ष तक गद्दी पर आसीन होकर रात-दिन अथक परिश्रम करके देश के गाँवो में घूमकर अनेक जीवों को सत्संगी बनाकर सर्वावतारी श्रीहरि की पहचान कराई थी । छपैया, ईडर, बामरोली जैसे स्थलों पर महा मंदिरो का निर्माण कराकर सत्संग की प्रवृत्ति से अनेक चोर-डांकु को सत्संगी बना लिया था । अनेकों को जीवन का महा मार्ग बताया तथा बामरोली जैसे ग़ाँव में तो विशेष कृपा करके ऐसा वरदान दिया कि "जो कोई मनुष्य इस गाँव की शरहद में शरीर छोड़ेगा उसे हम श्रीहरि के साथ आकर धाम में ले जायेंगे । यह वरदान आज तक सत्य हुआ है । अनेक उत्तम सत्संग का विकास जिनके हाथों हुआ है ऐसे आदि-आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ।

आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री अर्थात् भगवान श्रीहरि के लाडले पुत्र, एक आत्मनिष्ठ एवं आध्यात्मनिष्ठ, देह के सुख दु:ख से परे, निडर, अपार करुणा के सागर, वचन सिद्ध होते हुये भी निरभिमानी सभी के हृदय के मालिक, पुण्यात्मा ऐसे धर्माचार्य, सदा प्रभु के बल को आगे रखकर चलने वाले, गृहस्थ के वेष में भी वैराग्यवान संत ऐसे आचार्य महाजश्री का २०० वाँ जन्मोत्सव ता. ३-६-०९ के दिन मनाया जायेगा, इसलिये हम सभी श्री नरनारायणदेव की कृपा से हर्षोल्लास के साथ मनायाजाने वाला यह महा महोत्सव "धर्मकुल वन्दना महोत्सव" का लाभ लेकर कृत कृत्य होकर अपने जीव का कल्याण करलें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदास का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अप्रैल-२००९



१. नारायणपर (कच्छ) पदार्पण ।

२. श्रीहरि प्रागट्योत्सव श्रीहरि जयंती रामनवमी - अक्षर भुवन बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से किये ।

३ से १५. तक सीडनी (ओस्ट्रेलिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर में आयोजित कथा-पारायण एवं सत्संग प्रचारार्थ विचरण ।

१६-१७ भुज (कच्छ) सुरजपर श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा (बहनों के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. लसुन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. प्रीतिबहन महेशभाई के यहाँ पदार्पण, एलिसब्रिज ।

२०. चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२२-२३. जामसर (हालार-मूलीदेश) प.भ. दयालजीभाई के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (हालार) श्री रोकड़िया दादा के पाटोत्सव प्रंसग पर पदार्पण ।

२४. डांगरवा गाँव में पदार्पण ।

२५. अमराईवाड़ी श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पूर्व) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
खोखरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जन्म द्विशताब्दी-धर्मकुल वन्दना महोत्सव के उपलक्ष्य में विजयस्तंभ नगरयात्रा अपने अध्यक्ष स्थान पर धूमधाम के साथ श्री स्वामिनारायण म्युझियम से श्री स्वामिनारायण नगर पहुंची जहाँ पर विजय स्तंभ की स्थापना अपने वरद् हाथों से वेद विधि पुरस्सर संपन्न किये ।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोडा पुराना (इडर देश) के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
रात्रि में भुज (कच्छ) पधारे.

२९. भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव-अभिषेक अपने वरद् हाथों से किये ।

३०. माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।
पदुस्मा (माणसा) गाँव में प.भ. सुरेन्द्रभाई एस. पटेल के यहाँ पदार्पण ।
धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शनार्थ पदार्पण । वहीं से सीमेज गाँव में पदार्पण ।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद मंदिर

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प्रसादी के स्थलों का वर्णन करने के लिये अहमदाबाद से बाहर जाना है। परंतु जल्दी निकलना कठिन है। इस मंदिर में श्रीजी महाराज अनंतलीला किये हैं. श्री नरनारायणदेव अनंत चमत्कार दिखाये है।

मंदिर में श्रीजी महाराज की लीलाओं का वर्णन - श्रीजी महाराज ने कई स्थलों पर समाधि प्रकरण चलाये थे। यह वात श्रीहरि कृष्णालीलामृत ग्रन्थ में लिखी हुई है। एक समय भगवान श्रीहरि मेघपुर से संत मंडल के साथ अहमदाबाद पधारे। उस समय श्रीहरि का धूमधाम के साथ स्वागत किया गया था। श्रीहरि भोजन करके मंदिर में आराम कर रहे थे। उस समय नगरजन श्रीहरि का दर्शन करने के लिये एकत्रित हुये। कामदेव को मुग्ध कर देने वाली मोहक श्री नरनारायणदेव की मूर्ति का दर्शन करते ही सभी को समाधि लग गई। समाधि में कितने लोगों ने देखा कि श्रीहरि के अंग में से हजारों सूर्य की किरणें चारो तरफ फैल रही है। कितनों को गोलोक धाम दिखाई दिया। वहाँ देखा तो श्री राधिकाजी के साथ श्रीकृष्ण भगवान विराजमान थे। कितनो ने वैकुंठधाम में चतुर्भुज भगवान विष्णु का दर्शन किया। सभी लोगों ने श्री नरनारायण मुनि को परब्रह्म परमात्मा के स्प में देखा। इसलिये बड़ी श्रद्धा के साथ दर्शन के लिये एकत्रित हुये। इसमें यवन जाति के लोग भी थे। जैन शाक्त, कौल, शैव, वैष्णव तथा अन्य धर्मों के लोग भी उपस्थित थे। वे सभी श्रीहरि का दर्शन करते ही समाधिस्थ हो गये। समाधि अवस्था में जो रामचन्द्र के भक्त थे उन्हें सीताराम तथा लक्ष्मण का दर्शन होने लगा। नरसिंह भगवान के भक्तों को नरसिंह भगवान का, शिवपंथी को शिव पार्वती का, श्री गणपति के भक्तों को श्री गणपतिजी का, देवी के भक्तों को देवी का, जैनों को तीर्थंकरो का, मुसलमानो को पैगंबरों का, ब्रह्मज्ञानियों को ब्रह्म का दर्शन होने लगा। सूर्य के उपासको को सूर्यका, चन्द्र के उपासको को चन्द्रका दर्शन हो रहा था। कितनों को शेषशायी भगवान श्रीहरि का कितने आत्मज्ञानियों को आत्म स्वस्प का, कितनों को श्रीहरि की कृपा से अन्तर्यामीपना का भाव दिखाई दे रहा था। इस तरह श्रीनारायण मुनि भगवान का दर्शन करने के लिये आये हुये संभी को समाधि में अपने इष्टदेवों का दर्शन कराया। इस वात की प्रतिष्ठा पूरे समाज में हो गई कि श्रीनारायण मुनि ही स्वयं ईश्वर के अवतार है। परिणाम स्वस्प सभी नगरवासी श्रीहरि की शरण में आने लगे, उन्हीं का आश्रय करने लगे, उन्हीं का भजन-स्मरण करने लगे।

इस तरह श्रीहरि एक बार मंदिर में विराजमान थे उस समय श्रीहरिने अपने सर्वोपरिता को बताया था, जो यहाँ लिखने के योग्य है। उस समय सभा में अहमदाबाद के जगन्नाथ पटेल के पुत्र रणछोड़लाल तथा उनके पुत्र हरिवल्लभनाम के उत्तम भक्त थे। हरिवल्लभ भाई दोनो हाथ जोड़कर विनयपूर्वक भगवान स्वामिनारायण से पूछा कि हे कृपानाथ ! मेरे मन में एक प्रश्न उठ रहा है। आप सही मार्गदर्शन दीजियेगा। वह यह कि इस सत्संग में आप का द्वेष करने वाले बहुत है। आसुरी प्रवृत्ति वाले तिलक-माला का बहुत विरोध करते हैं। सत्संगगियों को त्रास देते हैं। इस उपाधि को दूर करने के लिये मैने दस हजार स्पये खर्च कर दिये। फिर भी वे लोग द्वेष भाव छोड़ते नहीं है। तो अब हम क्या करें ? इस सत्संग में मेरी दृढता कभी डिगे नही, ऐसी उपाय बताइये। इससे पहले अपने धर्म में से कितने

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ६

आचार्य महाराजश्री को विवाह में हाथी भेंट में मिलती

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

इस संसार को स्वप्न तुल्य माना जाता है । प्रायः सभी को स्वप्न आता है । संशोधक अनेक परीक्षण के बाद स्वप्न शास्त्र की रचना की । जिसमें व्यक्ति को जब स्वप्न आया हो वह समय, स्वप्न का प्रकार, स्वप्न की घटना, स्वप्न में अनुभव किये गये पर शुभ-अशुभ का विचार किया जाता है ।

महापुरुषों का स्वप्न में दर्शन बड़ी भाग्य से होता है । भगवान का दर्शन या संत का दर्शन भी शुभ कारक होता है । ऐसा कहा जाता है कि अनेक संशोधक विद्वानो को भी बहुत सारी भविष्य की घटना स्वप्नमें देखलेते है । कोई पूर्व जन्म की घटना को ऋणानुबन्ध के कारण भी स्वप्न में देखलेते हैं । किसी को किसी में विशेष प्रेम हो या आदर का भाव होतो वह भी स्वप्न आजाता है ।

मुझे भी कभी-कभी पू. बड़े महाराजश्री का तथा पू. आचार्य महाराजश्री का स्वप्न में दर्शन होता रहता है । उस स्वप्न को प्रातः उठने पर यदि याद रह जाता है तो लिख लेता हूँ । सितम्बर २००८ में प्रातः काल मुझे स्वप्न आया । पू. बड़े महाराजश्री विराजमान थे । उनके पास जाकर मैंने दंडवत प्रणाम किया, उस समय महाराजश्री अपने पास बुलाकर कहे कि यहाँ बैठिये । मैं महाराजश्री से करबद्ध प्रार्थना के साथ कहा कि "महाराजश्री ! आप हाथी पर बैठे हैं ?" पू. महाराजश्री ने उत्तर दिया लेकिन मुझे याद नहीं रहा और आँख खुल गयी । मन में यह प्रश्न धूमता रहता था । बाद में ऐसा विचार आया कि इस प्रश्न को पू. महाराजश्री से क्यों न पूछ लूं ! लेकिन इस प्रश्न को पूछने का संयोग कैसे बने । महाराजश्री इस समय म्युझियम के कार्य में व्यस्त है । कैसे, कब, और कहाँ वे शांति से विराजमान मिले और मैं उनसे पूछुं कि महाराजश्री आप कभी हाथी पर विराजमान हुये हैं ? फिर ऐसे कैसे पूछा जा सकता है ।

फिर भी पू. बड़े महाराजश्री की विनम्रता, उन्मुक्त स्वभाव, सत्संगी, संत, हरिभक्तों के प्रति का उनका आत्मीयप्रेम इतना अधिक है कि जिससे यह भाव आते ही ता. ९-९-०८ मंगलवार प्रातः ९-३० बजे महाराजश्री के मोबाईल पर फोन किया । मोबाईल व्यस्त आ रहा था, फिर भी मेरे मन में हुआ कि पू. महाराजश्री जब यह नंबर देखेंगे तो अवश्य फोन करेंगे और यह सत्य निकला कि महाराजश्रीने देखकर ठीक १०-१५ बजे फोन किये । मैं प्रथम महाराजश्री को अभिवादन के साथ मोबाईल फोन करने का आभार माना, बाद में स्वप्न की सम्पूर्ण विगते बता दी ।

मेरे सुखद आश्चर्य के बीच में पूज्य बड़े महाराजश्रीने हंसते हुये उत्तर दिया कि "हम तो कितनी बार हाथी की सवारी किये हैं । अहमदाबाद में हमारे पुराने निवास स्थान पर हाथी रखते थे । पू. बापूजी के विवाह में हाथी भेंट में मिला था । हाथी के लिये महावत भी था । हमारा हाथी बहुत सुन्दर था । माउथ ओरगन सूंड से बजाता था । सूंड से सलाम करता था । विशेष तो यह कि जब जलझीलणी एकादशी आती तब शोभायात्रा में हाथी के ऊपर अंबाडी रखी जाती थी । जलझीलणी की शोभायात्रा में अपने आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री हाथी के ऊपर शोभायात्रा में बैठकर सभी को दर्शन देते थे । इस के साथ ही प्रसंग के अनुसार स्वयं पदों की रचना करते । उन्ही अद्‌भुत पदों की "अवध कीर्तनावली"

धर्मकुल वंदना महोत्सव प्रसंग पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर से प्रकाशित की गयी है। हाथी बैठा हो उस समय सीढी से चढकर हाथी के हौदे पर बैठते थे। पीछे एक पार्षद भी बैठता था। कम से कम ५-६ कि.मी. तक यह शोभायात्रा अहमदाबाद के मुख्य विस्तार से होकर निकती थी, बाद में अपने मंदिर वापस आती थी। शोभायात्रा में आगे चांदी की पालकी में ठाकुरजी, बैन्डपार्टी, उत्सवी मंडल, भाई-बहनों का कीर्तन मंडल, रासमंडल एवं संत मंडल भी इसमें समालि रहते।

पूज्य बड़े महाराजश्री की विनम्र वाणी सुनकर मै भाव विभोर हो गया। पू. महाराजश्री ने बताया कि आज भी हमारे पास दो हौदे हैं। जिसे हम म्युझियम में रखेंगे। हाथी का तथा शोभायात्रा का फोटो आज भी मेरे पास है। मैंने महाराजश्री से घुड़सवारी एवं स्वीमिंग के विषय में भी पूछा, तो महाराजश्रीने कहा कि मूली मंदिर में माणकी घोड़ी का अंतिम वंशज था। हम घुड़सवारी भी खूब किये हैं। स्वीमींग हमारे दादा अच्छी तरह जानते थे। उस समय का फोटो मेरे पास है। आचार्य महाराजश्री स्वीमींग जानते हैं मै नहीं जानता। बड़े महाराजश्री ३४-४० वर्ष पूर्व की बात फोन पर किये, मैं अपने जीवन के धन्यता का अनुभव करने लगा। मेरे स्वप्न की सार्थकता आज प्रत्यक्ष हुई, जिसे समाज के समान रखा हूँ। भगवान के अपर स्वस्म पू. बड़े महाराजश्री का यह भाव हम सभी के प्रति आदर्श प्रगट करनेवाला है। संप्रदाय की ऐसी मूल्यवान भूतपूर्व घटना (विगत) सभी के लिये प्रेरणा स्म है।

पृष्ठ ४ से आगे.....

लोग अडिग रहे उनकी बात बताइये।

स्वामिनारायण भगवान कहते हैं हे भक्तराज ! आपकी शरीर में स्थित आत्मा को स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण इन तीन देहों से अलग समझो। आत्मा को अक्षरब्रह्म मानकर भगवान का भक्त हूँ ऐसी दृढता करो तथा भगवान के स्वस्म को समझो। भगवान की मूर्ति के सिवाय ब्रह्मादिक तैतिस करोड़ देवताओं के लोक में सुख नही है। मूल पुस्म महामाया, प्रधान पुस्म हिरण्यगर्भ, विराटनारायण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये सभी ईश्वरो तथा सिद्ध, गन्धर्व, लोकपाल इन सभी का धाम एवं भोग, सुख-समृद्धि अक्षरधाम के आगे तुच्छ है। कोई भी सुख हमारी मूर्ति के सुख के एक अंश बराबर भी नहीं है। अभी जिन ईश्वरों, देवों का वर्णन किया वे सभी मेरी भजन करते हैं। हमारी आज्ञा विना एक तृण भी नहीं हिल सकता। हमारे भय में सूर्य तपता है। हमारे भय से पृथ्वी स्थिर रहती है। हे बुद्धिमंत ! इस प्रमाणानुसार हमारी महिमा आप समझें। इस तरह ज्ञान होने पर जगत का बंधन आप को लगेगा नहीं। कुसंग का योग होने पर भी आपकी सत्संग से दृढता डिगेगी नहीं।

पूर्व बहुत सारे भक्तों को कष्ट सहन करना पड़ा है। असह्य दुःख होते हुये भी सहनशीलता बनी रही। सत्य को छोड़े नहीं। पांडव, द्रोपदी, कुन्ती, वसुदेव, देवकी, राजामुचकुंद, ब्राह्मण श्रीदामा, कदर्प वणिक, शेक करिंद, विदुरजी, जानकीजी, ये सभी शूरवीर भक्त बहुत दुःख सहन किये हैं। तिरस्कार सहन किये है। संपत्ति नष्ट हो गयी है। फिर भी ये लोग सांसारिक सुख दुःख को तुच्छ मानकर भक्तिभाव युक्त होकर हमारी भजन करते रहे हैं। संकट के समय में भी धैर्य रखे है - प्रहलाद जनक, यक्ष, बलि, शिबी, ध्रुव, जयदेव, रंतिदेव सुधन्वा, मुद्गल, अंबरीष, नल, मयूरध्वज, हरिश्चन्द्र, शुक, नारद, जडभरत, ऋषभदेव, जाजलि, आर्सणि उपमन्यु, ये सभी आपत्ति में भी धर्म एवं भक्ति से विमुख नहीं हुये। इस तरह कहकर सभी का आख्यान श्रीहरिने अलग-अलग सुनाया।

(क्रमशः)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)



आध्यात्मिक संगीत

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

यह जिंदगी एक वाद्ययंत्र है । वाद्ययंत्र बजाने आवे तो संगीत प्रगट होती है । बजाने नहीं आवे तो शोर गुल होता है । मात्र आवाज ! मानवजीवन में जीने का ढंग हो तो संगीत प्रगट होती है । यदि मानव जीवन जीने का ढंग न आवे तो जिंदगी मात्र आवाज बनकर रह जायेगी । श्रीराम की माता कैकेयी जिन्होंने जिंदगी में मात्र आवाज ही किया । संगीत पैदा नहीं कर सकीं । लेकिन जंगल में रहने वाली भील जाति की शबरी जो पढी लिखी नहीं थी फिर भी उसने अपने जीवन में संगीत प्रगट किया। उसे राजनीति नहीं आती थी फिर भी भगवान श्रीराम उसके यहाँ स्वयं आये ।

श्रीकृष्ण भगवान के समय में भी पतिव्रता नारी गांधारी को संगीत प्रगट करने नहीं आया, लेकिन नदी किनारे कुटिया बनाकर रहने वाली विदुर की पत्नी के जीवन में संगीत प्रगट हुआ, परिणाम स्वस्म महाप्रभु द्वारिकाधीश उनके घर भाव से बनाई हुई भांजी खाये । (दुर्योधन की मेवात्यागी साग विदुरघर खायो) स्वामिनारायण भगवान के समय जीवन में संगीत प्रगट करने वाली बीजापुर की बजी बा, महेसाणा की कुशलबा, सोनबा, डांगरवा की जतनबा कितनी महिलाये हुई है । जीवन में ऐसी संगीत प्रगट करो कि भगवान आपके पास आकर खड़े रहे । आग्रह करके मांगे कि लाओ मैं भूखा हूं । ठाकुरजी की भूखे नहीं होते तो भी भाव के भूखे तो अवश्य होते हैं । जहाँ भाव नहीं होता वहाँ भगवान भूखे नहीं रहते । इसलिये ऐसी संगीत प्रगट करनी चाहिये कि भगवान स्वयं सामने से आकर खड़े रहें । उत्तर गुजरात में वहेलाल गाँव है, वहाँ जेसिंगभाई पटेल महाराज के अनन्य आश्रित भक्त थे । एकबार महाप्रभु जेसिंगभाई पटेल के घर विराजमान थे, उस समय भगवानने कहा कि तुम कुछ हम से वरदान मांग लो । भक्त के मन में हुआ कि प्रभु से क्या मांगू । भक्त भगवान से क्या मांगे !! विचार करने लायक है । भगवान से भक्त क्यां मांगे ? विचार करके रखना चाहिये । हो सकता है कभी एकाएक आकर प्रभु मांगने को कहे तो ? दूसरी मंजिल बनाना है ? मंहगाई बढ गई है । महाराज ! डॉकटर की दवा करते हैं तो भी दवा लाभ नहीं करती, थकचुका हूं..... ऐसा मांगना ? तो क्या मांगना ? भगवान भक्त पर प्रसन्न हो तो ऐसा वह जीव कैसा होगा ? जेसंगभाई जैसा होगा - जिसके जीवन में संगीत प्रगट हुई और महाराजसे जेसिंहभाई कहने लगा, महाराज ? जिस छत पर आप विराजमान है इस छत के नीचे से जो भी आपका भक्त जाय उसका आप अवश्य कल्याण करना । महाराजने ऐसा ही किया । यह भक्त धन्य है । स्वाममिनारायण भगवाने कह दिया कि जो भी मेरे नाम का स्मरण करते हुये जायेगा उसका हम अवश्य कल्याण करेंगे । यह अच्छी बात है । जब भी आप वहेलाल जांय अवश्य उस छत से होकर निकलियेगा ।

अपका रिजर्वेशन अक्षरधाम के लिये निश्चित । यह स्वामिनारायण भगवान का वरदान है । यही दिव्य संगीत है । जो स्वामिनारायण स्वामिनारायण कहते हुये उस छत से निकलेगा उसका सर्व विध कल्याण होगा ।

मित्रों ! यह आध्यात्मिक संगीत साधना के अलांवा संभव नहीं । सामान्य संगीत के लिये यदि साधना की जरुरत पड़ती है तो जन्म मरण के संबंध को हटाने के लिये, मोक्ष प्राप्ति के लिये तथा आत्यन्तिक कल्याण के लिये अनमोल संगीत प्रगट करना पड़ेगा । इसके लिये परमात्मा की भक्ति-उपासना, सेवा सत्संग, सद्भावना रुपी साधना जीवन भर चालू रखनी पड़ेगी । इसी में से आध्यात्मिक संगीत इस तरह प्रगट हो कि भगवान प्रत्यक्ष आकर खड़े हो जाय ।

●

पापी कौन ? पुण्यशाली कौन ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

पापी कौन ? पुण्य शाली कौन ? जगत के जीव को क्या खबर ? इस में भी उद्धत मानव विना विचारे द्रोह करता रहता है ।

एक समय भयंकर आंधी आई, आकाश में बिजली चमकने लगी । भयंकर स्थिति हो गयी । इसी समय दश राहदारी तूफान में फंसे हुये थे । वे विचार करने लगे कहाँ जांय । इतने में उन्हें जंगल की तरफ से गाँव की तरफ जाने वाला मार्ग मिला और वे गाँव में पहुँच गये । वहाँ उन्हें यह चिंता थी कि यहाँ अपना कौन ? किसके यहाँ रुके ? रात्रिका समय । इस तरह विचार करते चिंतातुर थे कि एक दालान मिली । उधर भयंकर तूफान, विजली की गड़गड़ाहट मानो अभी मकान गिर पड़ेगें । इतने में एक को विचार आया कि इसमें अवश्य कोई पापी है । इसीलिये इसी मकान पर बिजली गिरने जैसी आवाज हो रही है । यदि बिजली इस मकान पर गिरी तो एक पापी के कारण हम सभी मरेंगे । इसलिये जो पापी हो वह बाहर चला जाय तभी अन्य बच सकेंगे । कौन पापी है इसे निश्चित करने के लिये सामने एक वृक्ष है उसे स्पर्श करने के लिये एक-एक करके जाना होगा । जो मनुष्य पापी होगा उसी के ऊपर बिजली गिरेगी । अन्य बच जायेंगे सभी ने स्वीकार कर लिया । अब सभी को डर लगने लगी कौन पहले जायेगा । जिसने यह सलाह दी थी उसी को सभी ने बाहर जाने के लिये प्रथम कहा । वह घबड़ाते हुये मकान से बाहर निकला और दौड़कर वृक्ष का स्पर्श करके आया । इसी तरह दूसरे ने किया और क्रमशः सभी ने इस प्रक्रिया को किया, अब बचा अंतिम, उसनें समझ लिया कि मैं ही पापी हूँ । किसी पर बिजली नहीं पड़ी तो मुझ पर अवश्य पड़ेगी । इसलिये सभी मित्रों से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि मैं ही पापी हूँ, मुझे बाहर मत निकालो मैं मरजाऊँगा । अब सभी कहने लगे कि तूं अकेला मरेगा, तूं बाहर नहीं गया तो हम सभी मर जायेंगे । ऐसा कहकर हाथ पैर पकड़कर उसे बाहर कर दिये । इतने में भयंकर गड़गड़ाहट के साथ बिजली उसी मकान पर गिरी और मकान उन नवों के उपर गिरा, एक ही साथ सभी नव मर गये ।

स्वयं को जो पुण्य शाली मानते थे तथा अंतिम को पापी समझते थे, लेकिन कौन पापी तथा कौन पुण्यशाली इसका न्याय तो भगवान ही कर सकते हैं । वचनामृत शास्त्र में श्रीजी महाराजने स्व मुख से कहा है कि जगत के जीव जिसे पापी मानते है वह पापी नहीं होता एवं जगत के जीव जिसे पुण्यशाली मानते हैं वह पुण्यशाली नहीं होता ।

इसलिये कौन कैसा है, इस विचार में पड़े विना स्वयं के जीवन को सुधार लेना चाहिये । इसके लिये आवश्यक यह है कि - भजन - भक्ति, सत्संग, संत समागम इत्यादि करके अपने जीवन को कृतार्थ कर लेना चाहिये ।

भक्ति सुधा

एकादशी सत्संग सभा के प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

हम जातने हैं कि यह शरीर नाशवंत है । इसलिये शरीर को आत्मा से अलग-समझकर, आत्मस्वस्थ होकर व्यवहार करना चाहिये । परंतु हम जब दुःखी होते हैं उस समय आत्म चिंतन करना संभव नहीं होता । इसका कारण क्या है ? इसका कारण यह है कि मनुष्य के भीतर रही हुई प्रकृति है । वह प्रकृति भी तीन प्रकार की है । (१) सत्व गुण (२) रजो गुण (३) तमो गुण । पहेल हम तमो गुण को लेते है । तमो गुण के तीन लक्षण है - आलस्य, निंद्रा, प्रमाद प्रथम आलस्य पर विचार करें तो यह शरीर ही आलस्य के लिये मिली है । इसलिये शरीर का सम्पूर्ण उपयोग करना चाहिये । जैसे नदी या सरोवर के माध्यम से वर्षा के पानी को एकत्रित न किया जाय तो वह पानी व्यर्थ का वह जायेगा । इसी तरह हम सभी की यह शरीर मिली है । यदि इसका भी सही उपयोग न करें तो आलस्य में समय बिताने से शरीर की उपयोगिता खत्म हो जायेगी । क्योंकि यह शरीर वारंवार मिलने वाली तो है नही । इस लिये मनुष्य मात्र को चाहिये कि आलस्य का त्याग करके स्वधर्म को करे ।

अब दूसरी वात आती है नींद की । नींद किस तरह लेनी चाहिये ? नीद गहन अर्थात् गाढी होनी चाहीये । यदि परिश्रम से काम करेंगे तो नींद भी अच्छी आयेगी । जैसे संत, प्रभु की भजन में शरीर को इतना थका देते हैं कि नींद तुरंत आजाती है । बाद में योगनिद्रा लेते हैं । दूसरा यह कि अपने घर में कोई व्यक्ति विमार हो तो उसे भी निद्रा बारबार नहीं आती, उसका मुख्य कारण यह है कि उसकी शरीर थकी नहीं होती । यह कोई जरुरी नहीं है कि नींद बहुत अधिक लेनी चाहिये । परंतु स्वप्न विना की तीन घंटे की नींद सघन आजाय तो नींद पूरी हो जायेगी और आलस्य नहीं आयेगा । नींद आलस्य छोड़ते ही प्रमाद अपने आप दूर हो जायेगा ।

(२) रजो गुण - रजो गुण अर्थात् मनुष्य को अधिक से अधिक किसी पदार्थ में आशक्ति । रजो गुण से निवृत्ति के लिये मनुष्य को चाहिये कि अपने अपने आश्रम में रहकर स्वधर्माचरण करे । जो कुछ प्राप्त हो उसी में संतुष्ट हो । अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि स्वधर्म क्या है ? तो स्वयं प्राप्त होने वाला धर्म स्वधर्म है जैसे - किसी बालक को जन्मते ही मा-बाप मिल जाते है । इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म स्वयं मिल जाता है ।

(३) सतो गुण - सत्व गुण उत्तम कहा गया है। लेकिन सतोगुणी किसी कार्य को करने के बाद अहंकार नहीं आना चाहिये । जैसे हम प्रतिदिन श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया पूरी करके भूल जाते है, इसी तरह सत्कार्य प्रतिदिन करते रहेंगे तो कार्य भी सरल हो जायेगा और अहंकार भी नहीं आयेगा ।

एकादशी की सत्संग सभा में सांख्ययोगी बहने सत्संगी बहनों को वचनामृत को अच्छी तरह समझाती है । इससे सत्संगी बहनों में आनंद-उत्साह एवं प्रेरणा मिलती रहती है । प्रभु में सर्वोपरिता का भाव उत्तरोत्तर दृढ होता जाता है ।

अंत में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी प्रत्येक सभा में अचूक पधारकर आशीर्वचन देती है । उस समय सभी के मन अहोपना का भाव आ जाता है । ऐसा लगता है कि श्रीजी महाराज इस धर्मकुल के माध्यम से हम सभी को कितना दिव्य आनंद दे रहे हैं । हम सभी कितने बड़भागी हैं जो मूल संप्रदाय का आश्रय मिला है, ऐसा सुख अन्यत्र कहीं संभव ही नहीं है । ऐसी सभी को अनुभूति हो रही है । जो कुछ कमी है वह मात्र अपने में हैं । हमारे भीतर जो दोष

है उन्हें निकालने की जरूरत है। महाप्रभु स्वामिनारायण भगवान दोष दूर करने की परम शक्ति प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

•

साबरगंगा माहात्म्य

- सां.यो. कोकिलाबा तथा उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

गंगाजी में स्नान करने से पाप का नाश होता है। व्यक्ति पवित्र हो जाता है । क्योंकि एक समय बदरीपति श्री नरनारायणदेव गंगा में स्नान करने गये थे। स्नान करके वापस आ रहे थे, उस समय रास्ते में स्त्री वेश में हंसते हुये गंगाजी को देखा । तो उनसे पूछा की आप कौन हैं ? इतनी प्रसन्न क्यों हैं ? तब गंगाजीने बताया कि वामन अवतार में भगवान के चरण स्पर्श से तथा इस समय आप के स्नानादिक से पवित्र सर्वतीर्थो में श्रेष्ठ मैं मंदाकिनी हूँ। गंगाजी का वचन सुनकर भगवान ने कहा हे गंगा ? वामनजीके चरण स्पर्श तथा हमारे योग से इतना गर्व नहीं करना चाहिये । सर्व अवतार के अवतारी सर्व कारण के कारण पुरुषोत्तम नारायण का अभी योग नहीं हुआ है । तब तक सब व्यर्थ है । यह सुनकर गंगाजी ने सर्वोपरि प्राप्तिकी उपाय पूछा । तब नारायणने उग्र तप करने के लिये कहा । बाद में मंदाकिनी गंगाजी वंकायन मुनि के यहाँ पुत्री के स्प में प्रगट हुई और खूब तप की जिससे श्रीहरि प्रगट होकर वर मांगने को कहे । तब गंगाजीने भगवान का नित्य समागम हो यह मांगा । भगवान तथास्तु कहकर अदृश्य हो गये । गंगाजी को गढपुरमें नदी स्वस्प धारण करने को कहे । तथा मांडव्य मुनि, नीलकंठ ब्राह्मण का उद्धार करने को कहे । बाद में उन्मत्त गंगा के नाम से गढपुर में आज भी बह रही है । सभी का उद्धारकर रही है । पुरुषोत्तम नारायण मुक्तों के साथ कब मुझे पावन करेंगे इस भाव से सदा प्रतिक्षा करती रही । उसी समय श्रीहरि गढपुर पधारते हैं । अक्षराधिपति पुरुषोत्तम नारायण मुक्त मंडलो के साथ स्नान करके दिये गये वरदान को पूर्ण किये । इस प्रकार भगवान के योग से गंगाजी इतनी पावनकारी बनी । उन्मत्त गंगा की अपेक्षा साबरगंगा का सामर्थ्य विशेष है । एक समय उन्मतगंगा के पास सभी नदियां गयीं उस समय उन्मत्त गंगा सुवर्ण सिंहासन से खड़ी नहीं हुई । लेकिन साबर गंगा जब आयीं उस समय उन्मत्तगंगा खड़ी हो कर संमान के साथ भेटी एवं अपने सिंहासन पर बैठायी । यह देखकर सभी कहने लगी कि देखो हम सभी कितनी दूर से हरिद्वार-काशी इत्यादि स्थलों से आयी यह संमान नहीं की लेकिन साबर गंगा के आने पर कितना संमान की । यह सुनकर उन्मत्त गंगा ने कहा कि आपमें वामन भगवान ने मात्र अंगुठा बोरा था, यहाँ तो पुरुषोत्तम नारायण स्वयं २६ वर्ष तक मुक्तों के साथ स्नान किये हैं । साबरगंगा में पुरुषोत्तम नारायण तो ९९२ बार स्नान किये हैं । इसलिये इन्हें हम संमान दिये हैं । यह सुनकर सभी नदियां चुप हो गयी । इस तरह मंदाकिनी गंगा एवं उन्मत्तगंगा की अपेक्षा साबरगंगा की महिमा अधिक है ।

•

क्षमा निधी संत

- सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतलबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने सत्संग के मूल को मजबूत बनाने के लिये संतो को आज्ञा की - कम से कम १० मुमुक्षुजीव को पंच वर्तमान धारण कराना । उस समय संतो ने कहा कि कोई न मिले तो ? तब महाराजने कहा कि हे संतो ! कोई न मिले तो हरे वृक्ष को भी वर्तमान धारण करा सकते हैं । इससे वे वृक्ष किसी सत्संगी के घर जन्म लेकर आप सभी के संपर्क से मेरे स्वस्प को पहचानेगे और उनका कल्याण होगा । दूसरा यह कि वर्तमान धारण कराकर अन्न ग्रहण करना । तीसरी बात यह कि जहाँ कुत्ते की आवाज न सुनाई दे वहाँ रहना । ठंढी में एक वस्त्र धारण करके रहना । इस तरह संतो को महाराजने आज्ञा की थी । इस मार्ग में संत अडिग रहे ।





ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ

।। નિમંત્રણમ ।।

अवतीर्य निजाक्षरात्परादिह मूर्त्या बदरीवने स्थितः।
भुविभारतजीवशर्मणे नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

આપશ્રી આ આમંત્રણ પત્રિકા સમજી સહપરિવાર અવશ્ય પધારશો

પ.પ.શ્રી

અનંત કોટિ બ્રહ્માંડના અધિપતિ સર્વાવતારી પરબ્રહ્મ પરમાત્મા પૂર્ણ પુરૂષોત્તમ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ સ્વસ્વરૂપે રહીને સ્વહસ્તે સ્થાપેલ બદ્રીપતિ ભગવાન શ્રી નરનારાયણ દેવની અસીમ કૃપાથી શ્રી સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયની અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ ગાદીના શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનના વંશજ આદિ આચાર્ય શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજ જેઓશ્રીએ સતત ૪૨ વર્ષ સુધી ગાદી ઉપર વિરાજમાન રહીને સત્સંગ વિકાસ-પ્રચારના અનેકાનેક કલ્યાણકારી કાર્યો કર્યા તેમજ છપૈયા, સિધ્ધપુર, ઈડર, આમરોલી (મધ્યપ્રદેશ), ડુંગરપુર, માંડવી આદિ ધામોમાં મહામંદિરોનું નિર્માણ સંતો દ્વારા કરાવી અનેક મુમુક્ષુ જીવાત્માઓને મોક્ષભાગી બનાવ્યા એવા પરમ પૂજ્ય વિશ્વ વંદનીય આદિ આચાર્ય શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના પ્રાગટ્ય ને ૨૦૦ વર્ષ પૂરા થતા હોઈ તેઓશ્રીની જન્મ દ્વિશતાબ્દી "ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ" અતિ ધામધૂમથી ભવ્યાતિ ભવ્ય રીતે ઉજવવામાં આવનાર છે.

આ મહોત્સવ વિક્રમ સંવત ૨૦૬૫ના જેઠ સુદ-૯ તા.૧-૬-૨૦૦૯ને સોમવારથી જેઠ સુદ-૧૨ તા.૩-૬-૨૦૦૯ને બુધવાર દરમ્યાન સમગ્ર સંપ્રદાયના વિદ્વાન સંતો, સાધ્વીયોગી બહેનો, સમસ્ત સત્સંગીઓ તેમજ ધર્મપ્રેમી જનતા તરફથી ગુરૂઋણ અદા કરવા માટે પૂર્ણ ભક્તિ ભાવથી શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના અધ્યક્ષ સ્થાને તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના શુભ સંકલ્પ અને ભાવિ આચાર્ય પ.પૂ.૧૦૮ શ્રી ત્રૈલોક્યેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના સંપૂર્ણ રાજીપા થી અને શ્રી લક્ષ્મીનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી રાકેશપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની ઉપસ્થિતીમાં અમદાવાદના આંગણે ધામધૂમથી ઉજવાશે.

આ મહોત્સવ દરમ્યાન અનેકવિધ ધાર્મિક તથા સામાજીક કાર્યક્રમોના મંગલકારી આયોજનનો લાભ પ્રાપ્ત થશે.

આ દિવ્ય અલૌકિક મહામહોત્સવ પ્રસંગે "ધર્મકુળ" પ્રત્યે પોતાની શ્રધ્ધા-ભક્તિ અને પ્રેમની ભાવના સમર્પિત કરી પરમ કૃપાળુ પરમાત્મા શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો રાજીપો મેળવવા આ અમૂલ્ય અવસરના સાક્ષીરૂપ બની કૃતાર્થ થઈ પુણ્ય લાભ લેવા સપરિવાર ઉપસ્થિત રહેવા નિમંત્રણ.....

સ્થળ
શ્રી સ્વામિનારાયણ નગર,
ગણેશ હાઉસીંગ પ્રા.લી.
થલતેજ ચોકડી અને સોલા ઓવર બ્રીજ વચ્ચે,
સરજેજ-ગાંધીનગર હાઈવે,
થલતેજ, અમદાવાદ.

લી.
મહંત.શા.સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા
શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટી તથા
ધર્મકુળવંદના મહોત્સવ સમિતી
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ.

શ્રીમદ્ સત્સંગિભૂષણ પારાયણ વક્તાશ્રીઓ

• સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી નિર્ગુણદાસજી (વે.વ્યા. આચાર્ય) (અસારવા ગુરુકુળ) • સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી શ્રીજીપ્રકાશદાસજી (નારાયણપુરા મહંત)
• સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી પુરૂષોત્તમપ્રકાશદાસજી (પી.પી. સ્વામી) (જેતલપુરધામ) • સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી ગોલોકવિહારીદાસજી (કચ્છ-ભુજ)
• સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી નારાયણવલ્લભદાસજી (વડનગર મહંત)

મંગલમય કાર્યક્રમ

જેઠ સુદી-૯ ને સોમવાર તા. ૧-૬-૨૦૦૯ નો કાર્યક્રમ

સવારે : ૭-૦૦ કલાકે — **શ્રીમદ્ સત્સંગિભૂષણ પારાયણની પોથીયાત્રા**

પ.ભ. શ્રી રસીકલાલ અંબાલાલ પટેલ (મોખાસણવાળા)
મંદાર બંગ્લોઝ, અજન્ટા ઈલોરા હાઉસીંગ સામે, સુરધારા સર્કલ પાસે, ગણેશ પાર્ટી પ્લોટ સામે થલતેજ, અમદાવાદ-૫૪ ના ઘરેથી નીકળી શ્રી સ્વામિનારાયણ નગર વાજતે ગાજતે પહોંચશે.

સવારે : ૭-૩૦ કલાકે — **શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મુખ્ય પ્રવેશદ્વારનું ઉદ્ઘાટન**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૭-૪૫ કલાકે — **શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધૂનનો શુભ પ્રારંભ**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૮-૦૦ કલાકે — **શ્રી સ્વામિનારાયણ નગરમાં શ્રી નરનારાયણદેવના મંદિરની પૂજા, આરતી**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૮-૩૦ કલાકે — **શ્રી ધર્મકુળવંદના મહોત્સવનું દીપ પ્રાગટ્ય**

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૮-૪૫ કલાકે — **શ્રીમદ્ સત્સંગિભૂષણ પારાયણ પ્રારંભ તથા વચનામૃત સંહિતાપાઠની પૂજન-આરતી**

સવારે ૮-૩૦ કલાકે પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૯-૧૫ કલાકે — **શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના જીવન આધારીત ચિત્રોના પ્રદર્શનનું ઉદ્ઘાટન**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૯-૩૦ કલાકે — **શ્રીહરિયાગનો શુભ પ્રારંભ**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૧૧-૩૦ કલાકે — **શ્રી ઘનશ્યામજન્મોત્સવ.**

સાંજે : ૬-૩૦ કલાકે — **૨૦૦ વચનામૃત સંહિતા પાઠના તથા શ્રીહરિ મહાયજ્ઞના યજમાનોનું સન્માન**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સાંજે : ૬-૪૫ કલાકે — **પુસ્તક તથા ઓડિયો સીડીનું વિમોચન**

આદિ આચાર્યશ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના જીવન ચરિત્ર પુસ્તક તથા અવધ કીર્તનાવલી પુસ્તક તથા અવધ કીર્તન વંદનની ૩ ઓડિયો સીડીનું વિમોચન તેમજ પુસ્તક તથા ઓડિયો સીડીના સૌજન્ય દાતાશ્રીઓનું સન્માન પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે થશે.

રાત્રે ૯-૦૦ કલાકે — **ભજન સંધ્યા (રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૨-૦૦)**

ગુજરાતના સુપ્રસિદ્ધ ભજનીક શ્રી નીરજંન પંડ્યા તથા
શ્રી સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના કીર્તનના ગાયક શ્રી હસમુખ પાટડીયા તથા શ્રી જયેશ સોની તથા શ્રી દિનેશ વધાસીયા તથા શ્રી પૂરવ પટેલ

જેઠ સુદી-૧૦ ને મંગળવાર તા. ૨-૬-૨૦૦૯ નો કાર્યક્રમ

સવારે : ૭-૦૦ કલાકે — **સમૂહ મહાપૂજા**

મહાપૂજાના યજમાનશ્રી દ્વારા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં સંપન્ન થશે.

સવારે ૧૧-૦૦ : કલાકે — **સહ યજમાનશ્રીઓનું સન્માન**

ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવના તમામ સહયજમાનશ્રીઓ તથા રસોડામાં સીધા-સામગ્રીની સેવા આપનાર યજમાનશ્રીનું સન્માન પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

બપોરે ૧૨-૦૦ : કલાકે — **ધાર્મિક પરીક્ષા ઈનામવિતરણ**

શ્રી નરનારાયણદેવ ધાર્મિક શિક્ષણ વિભાગ દ્વારા લેવાયેલ ધાર્મિક પરીક્ષાના બાળકોને ઈનામવિતરણ પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે તથા બાલીકાઓને ઈનામવિતરણ પૂ. લાલી રાજાશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સાંજે ૫-૦૦ : કલાકે — **શોભાયાત્રા**

મહારાજશ્રીની ભવ્ય શોભાયાત્રા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસ સ્થાનેથી નીકળી ગુરુકુળ રોડ, સુભાષ ચોક, ડ્રાઈવ-ઈન રોડ, થલતેજ ચાર રસ્તા થઈશ્રી સ્વામિનારાયણ નગર પહોંચશે.

રાત્રે ૯-૦૦ કલાકે **ભજન સંધ્યા (રાત્રે ૯-૦૦ થી ૧૨-૦૦)**

ગુજરાતના સુપ્રસિદ્ધ ભજનીક હેમંત ચૌહાણ.

જેઠ સુદી-૧૧ ને બુધવાર તા. 3-૬-૨૦૦૯ નો કાર્યક્રમ

સવારે : ૫-૦૦ કલાકે **શ્રી નરનારાયણદેવની મંગળા આરતી**

સવારે : ૫-૧૫ કલાકે **મહાભિષેકની પૂજા વિધિ**

શ્રી નરનારાયણદેવ મહાભિષેકનું પૂજન યજમાનશ્રી દ્વારા સવારે ૫-૧૫ થી ૬-૦૦ કલાકે

સવારે : ૬-૦૦ કલાકે **શ્રી નરનારાયણદેવ આદિ દેવોનો મહાભિષેક**

શ્રી નરનારાયણદેવ આદિ દેવોનો મહાભિષેક પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા વડતાલના પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે સવારે : ૬-૦૦ થી ૬-૩૦ થશે.

સવારે : ૮-૩૦ કલાકે **શણગાર તથા અન્નકૂટ આરતી**

શ્રી નરનારાયણદેવ આદિ દેવોનો છપ્પનભોગ (અન્નકૂટ) તથા શણગાર આરતી થશે.

સવારે : ૯-૧૫ કલાકે **શ્રીહરિ મહાયજ્ઞની પૂર્ણાહુતિ**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા વડતાલના પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે.

સવારે : ૧૦-૦૦ કલાકે **શ્રીમદ્ સત્સંગિભૂષણ પારાયણની પૂર્ણાહુતિ**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૧૦-૦૦ કલાકે **પ્રાગટ્ય જન્મજયંતી પ્રસંગનું પૂજન-આરતી**

આદિ આચાર્યશ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની ૨૦૦ મી પ્રાગટ્ય જન્મજયંતી પ્રસંગનું પૂજન-આરતી પ.પૂ. વડીલ સંતો, મુખ્ય યજમાનશ્રી અને બીજા મુખ્ય યજમાનો દ્વારા થશે.

સવારે : ૧૦-૧૫ કલાકે **સમગ્ર ધર્મકુળનું પૂજન-આરતી**

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધીશ્વર આચાર્ય મહારાજશ્રી, વડતાલ પીઠાધીશ્વર આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા સમગ્ર ધર્મકુળનું પૂજન અને આરતી મુખ્ય યજમાનશ્રી તથા સહ યજમાનશ્રી દ્વારા થશે. તથા પ.પૂ.અ.સૌ. ગાદીવાળાશ્રી તથા પ.પૂ. મોટા ગાદીવાળાનું પૂજન અને આરતી, પ.પૂ. સાંખ્યયોગી બહેનો અને યજમાનશ્રીના ધર્મપત્નીઓ દ્વારા

સવારે : ૧૦-૩૦ કલાકે **મુખ્ય મહેમાન તથા મુખ્ય યજમાનશ્રીનું સન્માન**

ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવમાં સેવા કરનાર મુખ્ય યજમાનશ્રીઓ અને પધારેલ મુખ્ય મહેમાનોનું સન્માન પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ના શુભ વરદ્ હસ્તે થશે.

સવારે : ૧૧-૦૦ કલાકે **સંતોના પ્રાસંગીક પ્રવચનો**

અમદાવાદ તથા વડતાલ દેશના પ.પૂ. વંદનીય વડીલ સંતોના પ્રવચનો.

સવારે : ૧૧-૩૦ કલાકે **ધર્મકુળના આશીર્વચન**

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના શુભાર્શીવાદ, શ્રી લક્ષ્મીનારાયણદેવના પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી રાકેશપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના તથા શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના શુભાશીર્વાદ.

બપોરે : ૧૨-૦૦ કલાકે **સમગ્ર મહોત્સવનું સમાપન પ્રવચન**

સમગ્ર મહોત્સવનું સમાપન પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના આશીર્વાદ પ્રવચનથી થશે.

બપોરે : ૧૨-૧૫ કલાકે **શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર ધૂનની પૂર્ણાહુતિ**

બન્ને દેશના પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે.

एक समय महाराज एक प्रकरण चलाये कि रात्रि में शब्द सुनाई न दे इस तरह रहना । उसमें भी खुल्ले आकाश में और एक वस्त्र में । ऐसी आज्ञा को भी संत शिरोधार्य किये था । एक दिन अतिशय ठन्ढी थी । संतोने ऐसा किया कि पूरी शरीर रेती में गाड़कर मात्र मुख खुल्ला रखे थे । इस स्थिति में भी संत अपने नियम से विचलित नहीं हुये थे । उसमें अद्‌भुतानंद स्वामी को हुआ कि इस तरह संत केवल माथे को बाहर रखकर सोंयेगे तो कोई घुड़सवार आकर संतो के मस्तक को कुचल देगा, इस लिये हम इसका ध्यान रखेंगे ।

इतने में महाराज माणकी पर सवार होकर वहाँ आये । अद्‌भुतानंद स्वामी ने माणकी की लगाम पकड़ लीये । महाराजने कहा अरे, इस अंधकार में कौन है ? तब स्वामीने कहा महाराज मैं हूँ । यहाँ क्या कर रहे हैं ? महाराज ! यह जो काला-काला दिखाई दे रहा है संतो का मस्तक है । आज ठन्ढी अधिक थी इसलिये संत रेती में शरीर गाड़ कर मस्तक बाहर रखकर सो रहे हैं । और मैं कोई घुड़सवार इनके उपर से न चला जाय इसके लिये ध्यान दे रहा हूँ । स्वामी की इस तरह की सेवा देखकर बहुत प्रसन्न हुये । कहने लगे कि स्वामी ! आप जो मागिये हम देंगे । स्वामीने कहा महाराज ! अब इन संतो से ठन्ढी सहन नहीं हो रही है । महाराज ने कहा ठीक है जिसे रहना हो वे रहें अन्यथा अन्य जिन्हे न रहना हो वे चले जांय । हमारी आज्ञा में रहना हो तो इसी तरह रहना पड़ेगा । ऐसा कहकर महाराज वहाँ से चल दिये । इतनी कड़ी परीक्षा के बाद भी संतो में कोई विपरीत विचार नहीं आया । प्रिय भक्तों ! संतो के माध्यम से महाराजने हम सभी को उपदेश दिया है । इन संतो के माध्यम से अनंत जीवात्माओं को एकांतिक भक्त बनाना था । इसलिये महाराजने इतनी कड़ी आज्ञा की थी । संतो में भी यह भाव था कि महाराज किस तरह हमारे ऊपर प्रसन्न हो । शरीर को दुःख हो या सुख इसकी चाहना नहीं थी, चाहना थी तो मात्र महाराज को प्रसन्न करने की ।

अब आप विचार कर सकते हैं कि उस समय संतो में कितनी दृढ निष्ठा थी । उसी का परिणाम था कि संत जो चाहते वही होता ब्रह्मांड में प्रलय की शक्ति उनमें होती । संतो की सहनशीलता मात्र जीव कल्याण के लिये थी। इसी की परीक्षा महाराज कर रहे थे । इन्हीं संतो पर संप्रदाय का उत्तर दायित्व आने वाला है तो संत इसमें कितना सफल होते हैं । वे सफल हुये । इस समय अपने इष्टदेव की प्रसन्नता तथा अपनी गुरुस्मा पूज्या गादीवालाश्री की प्रसन्नता बनी रहे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

अपने आगामी उत्सव

ज्येष्ठ शुक्ल-२	ता. २६-५-०९ को प्रांतीज मंदिर का पाटोत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल-५	ता. २५-५-०९ वाली (राज.) तथा बामरोली (एम.पी.) मंदिर का पाटोत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल-९ से ११	ता. १-६-०९ से ३-६-०९ तक आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री जन्म द्विशताब्दी धर्मकुल वंदना महोत्सव, सर्वोपरि छपैयाधाम मंदिर पाटोत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल-१३	ता. ५-६-०९ ईडर मंदिर पाटोत्सव
ज्येष्ठ शुक्ल-१२	ता. २०-६-०९ वडनगर मंदिर पाटोत्सव
आषाढ शुक्ल-४	ता. २६-६-०९ अयोध्या मंदिर पाटोत्सव
आषाढ शुक्ल-१५	ता. ७-७-०९ मंगलवार गुरुपूर्णिमा अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में संप्रदाय के धर्मगुरु श्रीहरि के साक्षात् अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पूजन अर्चन ।
आषाढ कृष्ण-१०	ता. १७-७-०९ शुक्रवार को संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज का १२ वाँ प्रागट्योत्सव

..... प्रश्न पेटी .....

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ "भगवान को नौ प्रकार की भक्ति कर भजन करने को भक्ति समझना और भगवान को सदैव साकार समझना और उपासना करनी" श्रीजी महाराजने यह बात कौन से वचनामृत में की है ?

प्रश्न : २ ज्ञान किसे समझना ? शिक्षापत्री के कौन से श्लोक में है ?

प्रश्न : ३ जुडा भाई वणिक बांधिया गाँव के गरीब हरिभक्त थे, उनकी श्रीजी महाराज के प्रति मन की इच्छा क्या थी ?

प्रश्न : ४ गढपुर में एक बार एक असुर स्वामिनारायण भगवान को पकडकर, दादा खाचर से युद्ध कर गढपुर पर विजय के हेतु से आया था उस असुर का नाम क्या था ?

प्रश्न : ५ शास्त्रमें भगवान की मूर्ति के चार ध्यान कहे है उनके नाम बताईये ?

प्रश्न : ६ एक बार श्रीहरिने स्वधाम जाने का संकल्प किया। उन्हें शरीर व्याधि जैन लगने लगी श्रीहरि ने ब्रह्मानंद स्वामी से कहा "स्वामी हम अब अक्षरधाम जाने की तैयारी कर रहे हैं" यह सुनकर स्वामी संत और हरिभक्त उदास हो गये। ब्रह्म मुनि की आँखो में से अश्रु धारा बहने लगी और मुख से विरह पद कौन से कीर्तन के रूप में नीकले ?

प्रश्न : ७ "हाँ रे हरिकृष्ण हैयानो मारे हार छे,हाँ रे जोईने जीवुं छुं सुंदर मूर्ति रे" ये अद्‌भुद कीर्तन के रचयिता कौन है ?

अप्रैल २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) अंश-५, अध्याय-२६१, श्लोक-१३०५२। (२) पाणवी। (३) संवत १७९५ श्रावण कृष्ण-८ (४) "दर्शने जाउं अने तेमनी डुंटी उपर रूपियो मेलवा दै तो भगवान खरा"। (५) लालजी सुथार को महाराजने अधोई गाँव में दीक्षा देकर भिक्षा मांगने के लिये उनके ससुर के यहाँ भेजा और अधोई में रहकर सत्संग करने की आज्ञा की, जिससे परिवार वाले सभी समझाने आये तब यह उपदेश की कडी "स.गु. निष्कुलानंद" जिनका नाम महाराजने रखा। (६) १. परब्रह्म २. चतुर्व्यु ह ३. विभव ब्रह्म ४. अर्चा ब्रह्म ५. अंतर्यामी ब्रह्म। (७) स.गु. मुक्तानंद स्वामी।

१. माधवजी भाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
२. घनश्यामभाई भगवानजीभाई परमार - सुरत
३. विष्णुभाई जीवाभाई पटेल - सीतापुर
४. अमृतलाल मोदी - सोजा
५. गोरधनभाई, शंकरदास पटेल - सोजा
६. स.गु. मुक्तानंद स्वामी - स्वा. मंदिर हर्षद बापुनगर
७. सां.यो. रसीला, सां.यो. अस्मिताबा - अहमदाबाद
८. सां.यो. रंजनबा, सां.यो. रेखाबा - बालासिनोर
९. हेतलबहन जसवंतभाई सुथार - ओढव-अहमदाबाद
१०. वर्षाबहन अरविंदभाई सोनी - मेमनगर-अहमदाबाद
११. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
१२. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
१३. सां.यो. रंजनबा और नानीबहन - स्वा.मंदिर, विराटनगर
१४. सुमित्राबहन नरेशभाई भावसार - विसनगर
१५. ज्योत्सनाबहन राजुभाई पटेल - आणंदपुरा
१६. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
१७. गंगाबहन भक्तिभाई - झुलासण
१८. त्रिभुवनभाई लक्ष्मणभाई पटेल - स्वा. मंदिर नवा वाडज
१९. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार - चांदलोडीया
२०. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
२१. शारदाबहन कांतिभाी पटेल -नांदोल
२२. साकरबहन नटवरभाई पटेल -नांदलो
२३. कैलासबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
२४. प्रफुलाबहन एस. पटेल - उवारसद
२५. विमलाबहन फकीरभाई पटेल - कपडवंज
२६. कीर्तिबहन कांतिलाल शाह - कपडवंज
२७. तरुलताबहन नलिनभाई आचार्य - मोरबी
२८. वीणाबहन रतिलाल भावसार - नवरंगपुरा
२९. सां.यो. मंजुबा भारतीबा - अहमदाबाद-हवेली
३०. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल
३१. गोरधनभाई सीतापरा - हीराबाडी-बापूनगर
३२. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
३३. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
३४. जयेश पटेल - कुजाड
३५. जगदीश चौधरी - अहमदाबाद
३६. शैलेषकुमार बाबुलाल अडालजा - रतनपर-मूलीदेश
३७. सां.यो. शिल्पाबा-शितलबा - सुरेन्द्रनगर
३८. कंचनबहन बाबुभाई पटेल - रतनपर-मूलीदेश
३९. परमार धर्मेन्द्रसिंह जीतुभा - जेतलपुर

सत्संग समाचार

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६५ वें प्रागट्योत्सव को धूमधाम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के छठे निवृत्त आचार्य प.पू.ध.धु. बड़े आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ६५ वां प्रागट्योत्सव जैसे-जैसे नजदीक आता गया वैसे वैसे संत-हरिभक्तों के आनंद की कोई सीमा न रही। अपने संप्रदाय में प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने देश विदेश में पत्ते-पत्ते पर श्रीहरि का नाम सार्थक किया है। छोटे-बड़े सभी हरिभक्तों के लिये कभी भेद नहीं रखा। इनके दर्शन करने से आत्म शांति मिलती है। पू. महाराजश्री के प्रागट्योत्सव को धूमधाम से मनाने के लिये पू. महन्त स्वामीने पू. बड़े महाराजश्री को निवेदन किया कि आप का जन्म दिन मनाया जाय तो महाराजश्रीने कहा यदि सादगी से मनायें और भजन कीर्तन हो तो मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा। इस तरह पू. महाराजश्रीकी आज्ञा शिरोधार्य करके चैत्र कृष्ण तृतीया के दिन भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में ६५ वां प्रागट्योत्सव भजन-कीर्तन के साथ मनाया गया था। सर्व प्रथम विद्वान पंडित प्रधानाचार्य श्री वाचस्पति मिश्र एवं कमलेशगोर इत्यादि ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन करके शुभेच्छा व्यक्त की गई थी। बाद में मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी जेतलपुर के महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा कांकरिया, धोलेरा, माणसा, इडर, मूळी, नारायणपुरा, नारायणघाट इत्यादि मंदिरो के महंत स्वामी पुष्पहार अर्पण करके, आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

इसके बाद स्कीम कमेटी के सभी सदस्य तथा कारभारीजी इत्यादि लोगों ने पुष्पहार पहनाकर आरती उतारके प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया था। इसी तरह सभा में पधारे हुये हजारों हरिभक्तों ने प.पू. बड़े महाराजश्री का चरण स्पर्श एवं दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था।

प्रासंगिक सभा में सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, जेतलपुर के महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी, मूली मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणस्वरूपदासजी, वडनगर के शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने प.पू. बड़े महाराजश्री की महिमा एवं संप्रदाय में की गयी अविरत प्रवृत्ति के विषय में तथा वर्तमान में श्री स्वामिनारायण म्युझियम की महिमा समझायी थी।

इस प्रसंग पर श्री संदीपभाई चोकसी की प्रेरणा से बहुत सारे हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये भेंट लिखाई थी। यह देखकर पू. बड़े महाराजश्री सभी भक्तों पर खूब प्रसन्न हुये थे। प.भ. रमेशभाई (दोरावाला)ने ६५ वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर ६५ फूट का सुन्दर पुष्पका हार पहनाया था।

अंत में समस्त सभा को भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। बाद में बड़े महाराजश्रीने शुभार्शीवाद देते हुये बताया कि अमेरिका में ६५ वर्ष होते ही कम्पल्सरी निवृत्त समझा जाता है आज से हम भी संपूर्ण निवृत हुये, इसलिये हमारी सेवा कम ली जियेगा। आज पूजा करते समय संकल्प किया कि श्री स्वामिनारयण म्युझियम का उद्घाटन संवत् २०११ फाल्गुन शुक्ल तृतीया के सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के दिन धूमधाम के साथ मनाया जाय। कारण यह कि आज के दिन श्री स्वामिनारायण म्युझियम का खात मुहूर्त किया गया था। इसलिये आज के दिन ही मैंने निश्चय किया है। इस तरह कहकर समस्त सभा को आशीर्वाद दिया। बाद में नंद-संतो द्वारा रचित कीर्तन भक्ति, धुन एवं श्रृंगार आरती के साथ सभा विसर्जित हुई थी।*(शा. आनंदजीवनदास)*

जेतलपुरधाम में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १८३ वाँ पाटोत्सव संपन्न

गुजरात एवं भारत देश में रहने वाले संप्रदाय के समस्त आश्रित प्रत्येक पूनम को पैदल चलकर पुत्र, धन, यश, व्यापारिक प्रगति, नौकरी, विवाह तथा विशेष रूप से भगवान की प्रसन्नता के लिये जेतलपुर धाम में विराजमान श्री रेवती-बलदेव, हरिकृष्ण महाराज की शरण में आते हैं। ऐसे महा प्रतापी देव का फाल्गुन कृष्ण-८ के दिन १८३ वां वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वा. शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के प्रेरणा से श्री रणछोड़भाई जेठालाल गणात्रा परिवार (कलोलीवाला) के यजमान पद पर धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक पारायण नवयुवान शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीके वक्तापद पर संगीत में सपन्न हुआ। इसके साथ श्रीहरियाग भी संपन्न हुआ। यजमान परिवार के पुत्र श्यामभाई, घनश्यामभाई, वरूणभाई तथा ऋषिकेशभाई इत्यादिने याग में भाग लिया था।

फाल्गुन कृष्ण-८ की प्रातः काल में आरती के बाद सुंदर श्वेत वस्त्र से सुशोभित श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज आदि देवों का षोडशोपचार विधि से महाभिषेक

पूजारी, ब्र. पूर्णानंद स्वामी के साथ पू. पी.पी. स्वामी, श्याम स्वामी, के.पी. स्वामी तथा वी.पी. स्वामी इत्यादि संतो ने भगवान का पंचामृत तथा केसर से अभिषेक किया था। इस अवसर पर अलौकिक दर्शन का लाभ लेने के लिये हजारों भक्त पधारे थे। अभिषेक के बाद कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी गयी थी। जिसमें ग्रंथ का पूजन, वक्ताजी का पूजन एवं आरती की गयी थी।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार इस प्रकार का अलौकिक लाभ प्राप्त करके खूब आनंदित हुआ था। आगामी ३८ वर्ष के बाद आनेवाले पाटोत्सव को अपने नाम सपन्न करने के लिये लिखवाकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की तथा संतो की प्रसन्नता प्राप्त किये थे।

पू. पी.पी. स्वामी तथा संत मंडलने यजमान परिवार को श्रीहरि के स्वस्मो को अर्पित करके आशीर्वाद दिया था। इस प्रासंगिक सभा का संचालन शा. हरिओंप्रकाशदासजीने किया था। विद्वान संतो की प्रेरणामयी वाणी तथा पू. पी.पी. स्वामी की अमृतमयी वाणी यजमान परिवार के लिये सुखकर रही। अंत में अन्नकूट आरती का दिव्य दर्शन करके सभी धन्य हो गये।

यजमान परिवार तथा श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी के सभी सदस्य मिलकर श्रीहरियाग के पूर्णाहुति की आरती किये थे। यहाँ पर दर्शन के लिये पधारे हुये संत-हरिभक्त महाप्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव करते हुये विदा हुये थे। इस प्रसंग का आयोजन शा.माधव स्वामीने किया था।

- साधु ब्रजवल्लभदास

कांकरिया मंदिर में मारुति यज्ञ

रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल-१५ हनुमान जयंती के दिन महाविष्णुयाग के आयोजन में हजारो भक्त यजमान पद पर रहकर यज्ञका महालाभ लिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी गुस्मसाददासजी तथा आनंद स्वामी तथा अन्य संत सायंकाल ६ बजे मारुति यज्ञ में नारियलहोम करके आरती उतारे थे। सभा में आगामी धर्मकुल वंदना महोत्सव धूमधाम से मनाने के संदर्भ में शा. यज्ञप्रकाशदासजीने पूर्ण स्म से समझाया था। इस कार्य में सभी को तन, मन, धन से सेवा करने को कहा था। अंत में सभी ने प्रसाद ग्रहण करके ९ से १२ बजे तक रात्रि में हनुमान चालीसा का पाठ किया था।

- नरोत्तम भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेई (ईडर देश)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में लेई का ४५ वां पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. भक्तिप्रियदासजी की प्रेरणा से खूब धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत् कथा शा.स्वा.चंद्रप्रकाशदासजी (बीलीया) के वक्तापद पर हुई थी। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे थे। बाद में सभा में संत-हरिभक्तों ने पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अंत में सभी सभाजनों को पू. महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। सभा संचालन शा.स्वा. आनंदजीवनदासजीने किया था। - *बाबूभाई रेवाभाई पटेल*

गुलाबपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

गुलाबपुरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. शा.स्वा. हरिस्वस्मदासजी की प्रेरणा से बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिव्य प्रतिष्ठा का सुंदर आयोजन संपन्न हुआ। मूर्ति प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान श्री सोमाभाई नरसिंहदास पटेल थे। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग कालीदास नरसीदास पटेल परिवार के पुत्र गांडाभाई अमृतभाई तथा विष्णुभाई के यजमान पद पर संपन्न हुआ। गाँव के प्रत्येक भक्तों ने येनकेन प्रकारेण यजमान पद ग्रहण करके महा लाभ लिया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संत तथा भूदेव यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे।

ता. १८-४-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब गुलाबपुरा पधारे उस समय धूमधाम से शोभायात्रा निकाली गई थी। यात्रापूर्ण होने के बाद पू. महाराजश्री बहनों के मंदिर में ठाकुरजी की प्रतिष्ठा करके आरती उतारे थे। प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी यजमान परिवार को श्रीहरि के स्वस्म को देकर आशीर्वाद दिये थे। बाद में शा.स्वा. हरिकेशदासजी, शा. हरिप्रियदासजी स्वामी, शा. चंद्रप्रकाशदास, रघुवीर स्वामी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदास, हिंमतनगर के महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी, इडर के महंत इत्यादि संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था। अंत में पूज्य आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। आभारविधि डॉ. निकीकुमार ने किया था। आगामी धर्मकुल वंदना महोत्सव के सन्दर्भ में सभी को जानकारी दी गयी थी। इस उत्सव पर रघुवीर स्वामी कृष्णप्रसाद स्वामी (टोरडा) जगदीश स्वामी (इडर) श्रीजी स्वामी, सत्यसंकल्पदासजी इत्यादि संतोने सुंदर सेवा की थी।

- को. गांडाभाई

धनसुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से

मनाया गाया था । ता. २७-३-०९ से २९-३-०९ तक श्रीमद् भागवत् दशम स्कंध का त्रिदिनात्मक नारायण महंत हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर) के वक्तापद पर संपन्न हुआ था ।

ता. २९-३-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय गाँव के हरिभक्तोंने दिव्य शोभायात्रा निकाली थी । शोभायात्रा जब मंदिर पहुँची उस समय प.पू. आचार्य महाराजश्री भी प्रथम ठाकुरजीकी आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे थे । प्रासंगिक सभा में श्री सोमाभाई वाघजीभाई परिवार ने तथा कमेटी के सदस्यों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । गाँव के तथा बाहर के हरिभक्तों ने पू. महाराजश्री का चरण स्पर्श करके तथा दर्शन करके अलौकिक लाभ लिया था ।

समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

ता. ३१-३-०९ के दिन बहनों के आग्रह पर प.पू.अ.सौ. गादीवाला श्री पधारी थी । उस समय समस्त बहनोने पूजन अर्चन का लाभ लिया था ।

इस प्रसंग पर शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा शा. छपैयाप्रसादजीने सुंदर सेवा का कार्य किया था ।

- सोमाभाई वाघजीभाई पटेल

उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत पुराणी स्वामी बालस्वरूपदासजी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २७वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल तृतीया के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से वेद विधि पुरस्स संपन्न किया गया था ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भक्तचिंतामणी अंतर्गत श्रीहरि ऐश्वर्य परचा प्रकरण का त्रिदिनात्मक पारायण सुप्रसिद्ध वक्ता स.गु.शा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी ।

इस प्रसंग के यजमान मोतीभाई प्रभुदास पटेल परिवार थे । प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो की प्रेरक वाणी के बाद समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था ।

- छोटे पी.पी. स्वामी महंतश्री नारायणघाट

आवनगर पुरा (प्रतापपुरा) मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की संपूर्ण प्रसन्नता से तथा यहाँ के अ.नि. पूज्य शा.स्वा. देवचरणदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदाजी के वक्तापद पर ता. ३१-३-०९ से ६-४-०९ तक संपन्न हुआ । संहितापाठ के वक्ता शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी थे ।

ता. ३१-३-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उस समय भव्य स्वागत किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, जेतलपुर, कांकरिया, ईडर, नारायणघाट, कलोल गुरुकुल के संत तथा पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स्वा. हरिचरणदासजी इत्यादि संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे ।

ता. ६-४-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । दोनों श्रीहरि के अपर स्वरूपों द्वारा श्री ठाकुरजी की आरती उतारी गयी थी । प्रासंगिक सभा में पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

इस सभा का संचालन शा.छपैयाप्रसाददासजी तथा स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी (माणसा) ने किया था । अन्य सेवा में स्वा. विजयप्रकाशदास, स्वा. विष्णुप्रसाददास, पु. चन्द्रप्रकाशदास, पा. भरत भगत ने अच्छी सेवा की थी ।

श्री पटेल मूलचंदभाई कचरदास, तुलसीदास कचरदास ईश्वरभाई एच. कोठारी एवं अन्य हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी ।

- नारायणभाई पटेल

तेजस्वी विद्यार्थीयों का प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से संमान

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चालु वर्ष २००९ में ली गई कक्षा १० एवं १२ की बोर्ड परीक्षा में ८०% प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों का सन्मान प.पू. भावि आचार्यश्री के १२ वें प्रागट्योत्सव के शुभ अवसर पर आषाढ कृष्ण-१० ता. १७-७-०९ शुक्रवार के दिन प्रातः ९ बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर में किया जायेगा ।

कक्षा १० तथा १२ (सायन्स) एवं कक्षा १२ (सामान्य) के प्रथम पांच क्रम में आनेवाले विद्यार्थियों को एवं ८०% से अधिक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से दिया जायेगा । इसी तरह उत्तम गुणांक प्राप्त करने वाली विद्यार्थीनियों को भी इसी शुभ अवसर पर प.पू.

गादीवालाजी को हवेली में प.पू. श्रीराजा के शुभ हाथों से दिया जायेगा । इसलिये जिन विद्यार्थी एवं विद्यार्थीनियों का नं. ८० प्रतिशत से अधित हो वे अपनी प्रमाणित मार्कसीट की प्रतिलिपि नाम, पता, फोन नं. के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ता. ३०-६-०९ तक धर्मकुल वंदना महोत्सव कार्यालय (सभा मंडप) में देजाय । इसके बाद मार्कसीट स्वीकार नहीं की जायेगी ।

नोंट : बहनें अपनी प्रमाणित मार्कसिट तथा पता अपना नाम एवं फोन नं. लिखकर ३०-६-०९ तक हवेली में दे जांय । इसके बाद स्वीकार नहीं किया जायेगा ।

- कोठारी दिगंबर भगत

धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तों की प्रेरणात्मक सेवा

सर्वावतारी श्रीहरि के स्थान पर विराजमान श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के आचार्य महाराजश्री (निवृत एवं वर्तमान) एवं प.पू. लालजीमहाराजश्री तथा धर्मकुल के प्रति उतनी ही निष्ठा है जितनी इष्टदेव श्रीहरि में सभी को है । सभी संत एवं हरिभक्त एकात्मभाव से धर्मकुल को देखते हैं । कारण यह कि आचार्यश्री साक्षात् श्रीहरि का निवास है । इसीलिये तो श्रीजी महाराज के अपर स्वरूप कहे जाते हैं ।

अभी गत महिने में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री "धर्मकुल वंदना महोत्सव" के उपलक्ष्य में अमेरिका की धर्मयात्रा पर थे । जिसका सामाचार नाईरोबी में रहनेवाले (मूल कच्छ के) प.भ. वालजी करशन हिराणी तथा प.भ. भीमजी मावजी राबडिया इन दोनो भक्तों के श्रीहरि की कृपा से प्रेरणा हुई कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री हम सभी के कल्याणार्थ पर्यटन कर रहे हैं । आराम भी नहीं करते । इसलिये ऐसे आचार्य महाराजश्री की अमेरिका यात्रा की एर टिकिट स्वये २,००,०००/- की सेवा दोनो भक्तों ने की । ऐसे हरिभक्तों की धर्मकुल के प्रति यह भावना अत्यन्त सराहनीय है । *-ब्र. पूजारी राजेश्वरानंदजी*

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६५ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में डायाबीटीश केम्प संपन्न

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६५ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में चैत्र कृष्ण तृतीया ता. १२-४-०९ रविवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से सेवा भावि डॉ. रमेशभाई परीख की देखरेख में डायाबीटीस केम्प का आयोजन किया गया था । जिसमें संतो के साथ हरिभक्तों ने (कुल १२७) लाभ लिया था । इस सेवा में डॉ. भाविन, डॉ. मुकेशभाई ने उत्तम निदान कार्य किया था । *- चेतन भगत*

श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल समौ, गोजारिया तथा इन्द्रपुरा के युवकों द्वारा अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का २२८ वाँ प्रागट्योत्सव मंदिर के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस में अधिक संख्या में भक्तों ने भाग लिया था ।

- न.ना. युवक मंडल

राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर

४० जितने हरिभक्तोंने ता. १३-३-०९ से १५-३-०९ तक श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद, जेतलपुर, डभाण तथा वडताल धाम से यात्रा का आयोजन किया गया था ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव के उपलक्ष्य में विजय स्तंभ स्थापनाएवं नगर यात्रा

अपने श्री नरनारायणदेव देश पीठ स्थान के सर्व प्रथम आचार्य प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जन्म द्विशताब्दी धर्मकुल वंदना महोत्सव के उपलक्ष्य में वैशाख शुक्ल तृतीया ता. २७-४-०९ के शुभ दिन विजय स्तंभ नगरयात्रा प.पू..ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में हजारों पूजनीय संत एवं विशाळ हरिभक्तोंकी उपस्थिति में अपने स्वामिनाराण म्युझियम नारायणपुरा से टू एवं फोर व्हीलर में भूयंगदेव चार रास्ता से सत्ताधार सर्कल होकर सोलाब्रीज से होकर धुन-भजन कीर्तन करते हुये नगरयात्रा श्री स्वामिनारायण नगर गणेश हाउसिंग कोर्पोरेशन पहुंची थी । जहँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विजय स्तंभ स्थापना वेद विधि पुरस्सर धूमधाम के साथ संपन्न हुई थी । पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से इस प्रसंग के यजमान श्री के.के. जेसाणी तथा धर्मपत्नी धनुबहन, सुपुत्री दीपा बहन, बीना बहन, इत्यादि परिवारजनों ने अलौकिक लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाया था । करीब ३००० जितने हरिभक्त अहमदाबाद कालुपुर मंदिर की तरफ से नास्ता की व्यवस्था में लगे थे । व्यवस्था का कार्यभार को. दिगम्बर भगत महंत स्वा: देवप्रकाशदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी (महंत नारायणघाट) पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी, को. जे.के. स्वामी, भक्ति स्वामी, योगी स्वामी इत्यादि संतोने सेवा की थी ।- *निलेश भगत*

लसुन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर

लसुन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव चैत्र कृष्ण ९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न हुआ

था । सर्व प्रथम भव्य शोभायात्रा के बाद प.पू. महाराजश्री ने बहनों के मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारी थी । बाद में पुरुषो के मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारकर प्रासंगिक सभा में पधारे थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी, स्वा. अखिलेश्वरदासजी इत्यादि संत "धर्मकुल वंदना महोत्सव" की रूपरेखा समझाये थे । इस उपलक्ष्य में वहाँ के हरिभक्तों ने २५१ डिब्बा तेल की सेवा का उद्घोष किया था । समस्त सभा को पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा था कि इस उत्सव में छोटे से छोटे हरिभक्त सेवा करें यह मेरी चाहना है । जिससे उस जीव का कल्याण हो । इस प्रसंग पर नाथद्वारा के महंत धर्मस्वरूपदाजी, सापावाडा के महंत नंदकिशोरदासजी, स्वा. विजयप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारे थे । प्रत्येक हरिभक्तों ने पू. महाराजश्री का चरण स्पर्श करके सुख का अनुभव किया था । श्री नरनारयणदेव युवक मंडल की सेवा प्रशंसनीय थी ।

- अरविंदभाई तथा अस्माभाई

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर में संपन्न श्रीहरि जयंती उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि जयंती रामनवमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिस में प्रातः महापूजा, अखंड मंत्रजाप तथा रात्रि में भव्य शाकोत्सव एवं रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि का प्रागट्योत्सव आरती धूमधाम से मनाई गई थी । बड़ी संख्या में हरि भक्तों ने दर्शन का लाभ लिया था । शा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की थी ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

श्रीजीनगर (ता. लहवद) श्री स्वामिनारायण मंदिर का १२ वाँ पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर के १२ वें पाटोत्सव के प्रसंग पर त्रिदिनात्मक भक्ति चिंतामणी की कथा साधु नीलकंठचरणदास के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट इत्यादि प्रसंग संपन्न हुआ । संतो ने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की महिमा समझाई थी । प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग करने के लिये विशेष आग्रह रखा गया था ।

- मोरी मगनभाई

धांगधा गुरुकुल में सत्संग शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर ता. ६, ७, एवं ८ अप्रैल को लुहाणा ज्ञाति की वाड़ी में श्री स्वामिनारायण संस्कार धाम गुरुकुल के संतो द्वारा सत्संग शिबिर का सुंदर आयोजन किया गया था । ३००० जितने हरिभक्तों को राम स्वामी इत्यादि संतोने सर्वोपरि श्रीहरि का तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था ।

- अनिलभाई दुधरेजिया

विदेश सत्संग वृत्तान्त

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया सीडनी का धर्मप्रवास

भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर सीडनी ब्लेक टाउन में आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा भव्य श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन ता. ५-४-०९ से ११-४-०९ तक प.पू. महाराजश्री के पावन सांनिध्य में संपन्न हुआ । संप्रदाय के प्रसिद्ध वक्ता श्री योगेन्द्रभाई भट्ट द्वारा बोमन होल में हुआ । इस कथा के यजमान श्री मनहरभाई अमीन परिवार थे । ट्रस्टी मंडल द्वारा तथा अन्य भक्त द्वारा यह कार्य संपन्न किया गया था । यह कार्यक्रम इस तरह संपन्न हुआ मानो कोई प्रतिष्ठा का उत्सव हो । ऐसा दिव्य लग रहा था ।

प्रतिष्ठा के बाद प्रथमवार पू. महाराजश्री पधारने वाले थे । इसलिये भक्तों में अदम्य उत्साह दिखाई दे रहा था। ता. ५-४-०९ के दिन प्रातः प.पू. महाराजश्री का सीडनी में आना भक्तों के लिये अविस्मरणीय बना । उसी दिन सायंकाल ब्लेक टाउन के मेयर तथा अन्य महानुभावों की उपस्थिति में पू. महाराजश्रीने दीप प्रगट करके कथा का आरंभ करवाया था । सातो दिन तक पू. महाराजश्री के कथा में उपस्थित होने से भक्तों को बहुत आनंद आया था । प्रतिदिन प्रातः से सायंकाल तक भक्तों के यहाँ पदार्पण तथा सायंकाल कथा में दर्शन-प्रवचन पुन- रात्रि में भी पदार्पण का सौभाग्य सभी को मिलता था । हम बहुत लम्बे सयम के बाद आये हैं इसलिये हम किसी भक्त की भावना को अधूरी नहीं रखेंगे । महाराजश्री का ऐसा शब्द मानो भक्तों में आत्मीयता का प्राण भरदिया था। कथा के समय कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मणी विवाह जैसे प्रसंग खूब धूम धाम से मनाये गये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री का दिव्य स्वागत किया गया था । कच्छ प्रदेश के सभी भक्तों

ने इसका दिव्य लाभ लिया था । लेझीम, बेन्ड, वाद्ययंत्रो के साथ पुरुष वर्ग तथा बहनें मस्तकपर कलश लेकर शोभायात्रा में सामिल हुई थी । ता. ११-४-०९ के दिन प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की समाप्ति के बाद पू. महाराजश्री संतो के साथ मेलबोर्न पधारे थे । संत मंडल में स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी, तथा पार्षद वनराज भगत पधारे थे । पू. महाराजश्री प्रतिवर्ष यहाँ पधारे ऐसी भक्तों ने प्रार्थना की थी । पू. महाराजश्री भी खूब प्रसन्न हुये थे ।

मेलबोर्न के सत्संग को देखकर पू. महाराजश्री खूब प्रसन्न हुये थे । वहाँ भी दो दिन भक्तों के घर पदार्पण करके सत्संग सुख दिये थे । प.पू. महाराजश्री वहाँ नवयुवानों का सत्संग के प्रति उत्साह देखकर आशीर्वाद दिये कि आप सभी श्री नरनारायणदेव में एक निष्ठा भक्ति रखियेगा । श्री नरनारायण पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी, वडनगर मंदिर के महंत स्वामी, कोटेश्वर गुरुकुल के स्वा. रामकृष्णदासजी इत्यादि संतो ने रंगोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी के समक्ष रंग का छींटा किया गया था । ऐसे शुभ अवसर पर हजारों हरिभक्त इस शुभ प्रसंग का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे ।

पू. बिन्दुराजा के पुत्र रत्न श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्य कुमार भी पू. मामाजी के साथ रंगोत्सव में थे और सभी को रंग में भिंगोडाले थे ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामीने अपने धर्मकुल वंदना महोत्सव की स्मरेखा समझायी थी । शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा स्वा. रामकृष्णदासजीने प्रसंगोचित प्रवचन किये थे ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी को एक निष्ठा भक्ति करने की बात कहे थे । सभी को महाराज सुखी करे ऐसा आशीर्वाद दिये थे । *- प्रविणभाई शाह*

चेरीहिल (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलदोलोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिसमें पेन्सिल वेनीया, एटलान्टिकसीटी, विहोकन मंदिर तथा कोलोनिया के हरिभक्त भी इस प्रसंग पर उपस्थित थे । स्वामीने आज के प्रसंग पर सुन्दर कथा की थी और नरनारायणदेव के माहात्म्य को समझाया था । ३ अप्रैल चैत्र शुक्ल ९ नवमी के दिन १२ बजे राम जन्मोत्सव समझाकर १०-१० बजे श्री घनश्याम महाराज के प्रागट्योत्सव को मनाया गया था । घनश्याम महाराज के जन्मोत्सव की आरती का दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके सभी धन्य हो गये थे । *- प्रवीणभाई शाह*

लुवी मेरीलन्ड (वोशिंग्टन डी.सी.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से १४ मार्च शनिवार को चर्च के पेरिस होल में ४-३० से ९ बजे तक सत्संग सभा एवं धुन-भजन का आयोजन किया गया था। कलिवलेन्ड से शा. हरिनंदन स्वामीने सेलफोन के माध्यम से सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की महिमा को समझाया था । १९ मार्च गुरुवार के सायंकाल को ५ से ९ बजे तक श्री शिवाविष्णु टेम्पल में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. नारायणवल्लभदासजी, महंत श्री देव स्वामी, स्वा. रामकृष्णदासजी, पार्षद वनराज भगत सभा में पधारे थे । सर्व प्रथम "आज मारे ओरडे रे" से सभा का प्रारंभ हुआ । महंत स्वामी ने संप्रदाय के चार मूल तत्व में से देव, आचार्य, धर्मकुल दीक्षित-आश्रित-संत तथा दोनो गादी द्वारा प्रमाणित शास्त्र के रहस्य को समझाया । धर्मकुल वंदना महोत्सव अपने आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को लेकर मनाया जाने वाला है । इस सन्दर्भ में स्वामीने बड़ी सुन्दर वात कहकर समझाया था । अंत में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि यहाँ का सत्संग उत्तरोत्तर खूब वृद्धि को प्राप्त करे । हरिभक्त क्रमशः चरण स्पर्श - दर्शन का लाभ लिये थे । इस सभा में करीब २५० जितने हरिभक्त उपस्थित थे । *- कनुभाई पटेल*

श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल नडोला झांबीया

यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से हरिभक्तों द्वारा प्रतिमास सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । जिस में एकादशी के दिन धुन-कीर्तन-भजन-आरती इत्यादि ३ घन्टे तक की जाती है ।

शिक्षापत्री का पठन, २७३ वचनामृत, भक्त चिंतामणी का पठन सभा में किया जाता है । *- जयेश आर. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-१-०९ रविवार को ३ बजे श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी । इस प्रसंग पर शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. भक्तिकेशवदासजी पधारे थे ।

ता. १०-१-०९ को दोनों संतोने महापूजा की विधि

करवायी थी। जिस के यजमान हसमुखभाई लक्ष्मीकांतभाई वाढेर भाई थे।

वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री भाष्य कथा का शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी एवं शा.स्वा. भक्तिकेशवदासजीने सुंदर शैली में कथा का रसपान कराया था। जिस के यजमान श्री रणछोड़भाई चोटलिया तथा श्री छगनलाल टांक थे। हरिभक्तों ने कथा श्रवण एवं देव दर्शन का लाभ लिया था। *- कानजीभाई मालवी*

ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं यहाँ के हरिभक्तों के साथ सहकार से ओकलेन्ड का प्रथम पाटोत्सव २१ मार्च के दिन धूमधाम से मनाया गया था।

देवों की आरती-अन्नकूट दर्शन का लाभ लेकर यहां के हरिभक्त धन्य हो गये।

दोपहर के समय मनाकु काउन्टी के मेयर श्री लेन ब्राउन उपस्थित थे। इसके अलांवा श्री के. एस. बक्षी, श्री राजेन्द्रप्रसाद, सुश्री केरोल व्युमोन्ट तथा अन्य सभी संसद सभ्य भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। ये सभी मंदिर की नीरव शांति, सुंदरता, तथा भारतीय संस्कृति का कलात्मक कार्य देखकर खूब प्रभावित हुये थे। मात्र एक ही वर्ष में इस मंदिर द्वारा संप्रदाय की परंपरा अनुसार भव्य उत्सव मनाया गया, जिसे देखकर वहाँ के रहने वाले भारतीय नागरिकों के मन में विशेष निष्ठा हो गयी है। इस मंदिर के निर्माण में डॉ. कांतिभाई पटेल का संपूर्ण योगदान है। बाद में अन्नकूट की आरती का दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके सभी स्वस्थान के लिये प्रस्थान किये थे।

यु.एस.ए. मे सेवा संस्था द्वारा आयोजित फ्री मेडीकल केम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से एवं प्रेरणा से अमेरिका में (आई.एस.एस.ओ.) संचालित सेवा संस्था द्वारा आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो एवं मंदिरों में अंधोनिर्दिष्ट मेडिकल केम्प आयोजित हुआ।

कार्यक्रम - पेडीआट्रीक हेल्थ केर

सेवा - वेल चाइल्ड केर वीझीट • १८ वर्ष से कम। अवस्था वाले सभी के लिये डेवलपमेन्ट स्क्रीनींग रविवार ५ अप्रैल सायं ५-३० से ७-३०

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

मोटरेटर्स - रक्षा पटेल सी. एम.डी.

रोहीणी नावलेकर, बी.ई.ए. पी.ए. परीमल पटेल डेन्टल हेल्थ केर।

बालकों तथा बड़ो के लिये डेन्टल चेक-अप शनिवार २५ अप्रैल २००९ सायंकाल ५-३० से ७-३०

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया मेडिरेटर्स की टीमने सेवा की थी।

कलिवलेन्ड (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) मंदिर का प्रथम पाटोत्सव संपन्न

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से विश्ववन्दनीय प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं महंत स्वामी हरिनंदनदासजी की प्रेणा से आई.एस.एस.ओ. कलिवलेन्ड मंदिर का प्रथम पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में स.गु. निष्कुलानंद रचित स्नेह गीता की कथा शा. धर्मवल्लभदासजीने की थी। ता. १९ अप्रैल को प्रातः ९ से १२ बजे तक मास्ति यज्ञ का आयोजन किया गया था। ता. १९ अप्रैल को पाटोत्सव के प्रसंग पर प्रातः ६-३० बजे ठाकुरजी की मंगला आरती में हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित थे। इसके बाद ठाकुरजी का महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों किया गया था। पंचाह पारायण की पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों संपन्न हुई थी। प्रासंगिक सभा में न्युजर्सी से पधारे हुये स्वा. माधवप्रसादजी तथा शिकागो से स्वा. हरिप्रसाददासजी ने प्रसंगानुस्प प्रवचन किया था। इस प्रसंग पर शिकागो, न्युजर्सी, डीट्रोईट, कोलंबस, सिनसीनाटी, टेनेसी, पेन्सीलवेनिया, वर्जीनिया, डेवर, बोस्टन, न्युयोर्क, इत्यादि आई.एस.एस.ओ. मंदिर तथा चेप्टरो से सत्संगी बड़ी संख्या में उपस्थित होकर पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। न्युजर्सी से प.पू. बिन्दु राजा भी बहनों को आशीर्वाद एवं दर्शन देने पधारी थी। सभा के अंत में कलिवलेन्ड मंदिर के प्रमुख श्री प्रकाशभाई ने आभार विधि की थी। सभा संचालन महंत स्वामीने किया था। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्रृंगार तथा अन्नकूट की आरती उतारकर हरिभक्तों को अलौकिक लाभ दिया था।

इस प्रसंग के यजमान श्रीमनहरभाई चेतनाबहन पटेल, पारायण के यजमान श्री जयदीपभाई रेश्मा बहन पटेल, अभिषेक के यजमान श्री प्रकाशभाई कीना बहन पटेल तथा भरतकुमार दक्षा बहन पटेल, अन्नकूट के यजमान श्री गिरीशभाई तथा दीपिका बहन पटेल थे।

मास्ति यज्ञ के यजमान श्री रिखवचंद जीवणलाल पटेल परिवार तथा अन्य हरिभक्तों ने लाभ लिया था। इस प्रसंग पर भक्तों की सेवा सराहनीय थी। *- प्रकाशभाई पटेल*

साउथजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में हनुमान जयंती

साउथ जर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ९ अप्रैल चैत्र शुक्ल १५ को श्री हनुमान जयंती के अवसर पर पंचकुंडी यज्ञ का आयोजन किया गया था । यज्ञ के मुख्य यजमान श्री कनुभाई कांतिलाल पटेल मोखासणवाला तथा दूसरे अन्य यजमानों ने उत्तम सेवा की थी । बाद में सभा में स्वा. विश्वप्रकाशदासजी ने श्री हनुमानजी का तथा धर्मकुल के इष्टदेव से संबन्धित उत्तम कथा कहकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया था । बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर यज्ञ दर्शन का लाभ लिये थे । अंत में मंदिर के प्रमुखश्री राजूभाई भक्तिभाईने आभार विधी की थी ।

– नविनभाई जी. पटेल, राजपर

जून-जुलाई २००९ संयुक्त अंक प्रकाशित होगा

श्री स्वमिनारायण अंक के प्रत्येक सभ्यों को जानकारी हो कि आगामी "श्री स्वामिनारायण मासिक" जून-जुलाई २००९ का अंक "धर्मकुल वंदना महोत्सव" विशेषांक के स्म में प्रकाशित किया गायेगा ।

श्री स्वामिनारायण मासिक के देश-विदेश में रहने वाले पत्रिका के वाचकों को ज्ञात हो कि अपने आदि आचार्य प.पू.ध.धु. आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जन्म द्विशताब्दी धर्मकुल वंदना महोत्सव आगामी १ से ३ जून तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की शुभ उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया जायेगा । यह पत्रिका उत्सव की स्मरेखा के साथ सचित्र रंगीन अलौकिक "धर्मकुल वंदना महोत्सव विशेषांक जून-जुलाई २००९ संयुक्त अंक जून २००९ की अंतिम ता. को प्रकाशित होगा । इसकी सभी जानकारी करलें । *– तंत्रीश्री*

विज्ञापन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चलते हुये श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर में अभ्यास करने के लिये प्रवेश चालू है । इसलिये यथाशीघ्र प्रवेशपत्र भरकर जमा कर दे । प्रवेशपत्र अधोनिर्दिष्ट स्थलों से प्राप्त किया जा सकता है ।

१. प्रवेशपत्र प्राप्ति स्थान
   क. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद फोन - ०७९-२२१३२१७०
   ख. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर फोन : ०२७१८-२८२३७६
   ग. श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. अक्षरमहोल वाडी जेतलपुर फोन : ०२७१८-२३३९६०, २८२५००
२. प्रवेश योग्यता - कक्षा ७ पास
३. प्रवेशपत्र के साथ कक्षा ७ पास की झेरोक्ष नकल
४. प्रवेशपत्र जमा करने की अंतिम ता. २५-५-०९
५. प्रवेश परीक्षा : लिखित एवं मौखिक ३१-५-०९ प्रातः ९ बजे
६. विद्यालय का सत्रारंभ - ८-६-०९ प्रात) ७-४५ बजे

संचालक श्री स्वामिनारायण सं.म.वि.
अक्षरमहोल वाडी जतेलपुर

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद (विसनगर) : श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स्वा. हरिचरणदासजी (उम्र ९५) गुरुस्वा. देवनंदनदासजी ता. १-४-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : प.भ. उमेशभाई नटवरभाई पटेल (गामडीवाला) ता. १८-३-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

उनावा : प.भ. भगाभाई आदरभाई पटेल (पूर्व कोठारी) ता. १०-४-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

बापुपुरा : प.भ. बाबुभाई प्रभुदास चौधरी ता. १८-३-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

चांदलोडीया : प.भ. साकरबहन नागजीभाई पटेल ता. ९-३-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

अहमदाबाद : प.भ. प्रहलादभाई डाह्यालाल ता. २६-११-०८ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

माणसा : प.भ. रमणलाल मगनलाल मोदी ता. ७-४-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुये है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



देते हुये प.पू.



हुये प.पू. बड़े
धर्मवल्लभदासजी







प.पू. बडे महाराजश्री के ६५ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में समूह में आरती हुये पूजनीय संत



प.पू. बडे महाराजश्री के ६५ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर सभाजन को आशीर्वाद देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री



गुलाबपुरा नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मे (बहनो के) मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री



भावनगरपुरा मंदिर मे प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार, साथ मे ब्र. पूजारी राजेश्वरानंदजी तथा कोठारी जे. के स्वामी



घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर मे पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुये हरिभक्त



कंजरी कंपा गाँव में सभा में डाह्याभाई कोठारी को आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री



कांकरिया मंदिर में श्री हनुमान जयंती प्रसंग पर मार्गत



समो मंदिर मे श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

धर्मकुल वंदना महोत्सव प्रसंग पर आयोजित विजय स्तंभ नगरयात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत हरिभक्त



सभा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं साथ में विराजमान पूजनीय संत



श्री नरनारायण देव

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

પ.પૂ. આદિ આચાર્ય
શ્રી અયોધ્યા પ્રસાદજી
મહારાજ શ્રી
જન્મ દ્વિશતાબ્દી
મહોત્સવ

ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ



પ.પૂ. આદિ આચાર્ય
શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રી



પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮
શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

તા. ૧ થી 3 જૂન ૨૦૦૯ જેઠ સુદ ૯ થી ૧૧ સુધી

સ્થળ:- ગણેશ હાઉસીંગ કોર્પો.લી., સરખેજ-ગાંધીનગર રોડ,
થલતેજ ચોકડીથી સોલા બ્રીજ વચ્ચે, થલતેજ, અમદાવાદ



-:આયોજક:-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

Jagadish offset

Jaful Kharsani